International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 18-20

नवउदारवादी अर्थतंत्र में किसान जीवन की त्रासदी–'बाजार में रामधन'

किशन सिंह यादव
हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

इस उम्मीद में की देश उन्नति करेगा और लोगों के जीवन में सुख-समृद्धि बढेगी देश की अर्थव्यवस्था सुधारने के नाम पर 90 के दशक में भूमण्डलीयकरण की नीतियों को लागू किया गया। ये नीतियां अपने चरित्र के कारण अनियोजित विकास को बढ़ावा देती है जिससे क्षेत्रीय विषमताएं उभरती है और जहाँ इनका पैर पड़ता है वहां सम्पन्नता और विपन्नता के दो ध्रुवों अंचल या समूह का विभाजन शुरू हो जाता है इससे हर जगह अंचल या समूह के बीच संघर्ष उभरते हैं। छोटी खेती और किसानों का अस्तित्व समाप्त होने लगता है और विशाल पैमाने पर बेरोजगारी बढ़ती है।[1] इनके लागू होने से समाज में तमाम तरह की दिक्कते शुरू हो गई जिनमें कृषि से जुड़ी समस्या प्रमुख है। इसी खेती-किसानी को आधार बनाकर कैलाश बनवासी ने 'बाजार में रामधन' कहानी लिखी जिसमें उन्होंने किसान के जीवन, खेती, उसके परिवार आदि से जुड़ी समस्या को अपनी कहानी का विषय वस्तु बनाया।

नई अर्थव्यवस्था लागू होने के बाद कुछ गांव अब शहर के रूप में विकसित हो रहे हैं। जाहिर है जहाँ शहर का विकास होगा वहाँ नगर के नियम कायदे और कार्य संस्कृति का भी विकास होगा। गांव की जगह नगर बनेगा तो गांव के नियम कायदे, कार्य संहिता और गतिविधि समाप्त होगी। ऐसे ही एक गांव का वर्णन इस कहानी में कैलाश बनवासी ने किया है। बलोद इस जिले की एक तहसील है। कुछ साल पहले तक यह सिर्फ एक छोटा सा गांव हुआ करता था जहाँ किसान थे, कुएँ और तालाब थे, उनके बरगद नीम और पीपल थे। पर अब यह एक छोटा शहर है। शहर की सारी खूबियाँ लिए हुए आस-पास के गांव देहातों को शहर का सुख और स्वाद देने वाला।[2] यह नया बाजार है जिससे रामधन का परिचय नहीं है पहले गांव की बाजार परिचित थी उसके नियम कायदे जटिल नहीं थे हर कोई दूसरे को पहचानता था और मानवीय संबंधों की भी कुछ कीमत थी। लेकिन अब सब कुछ बदल गया है जैसे परिवार में आपका रहन-सहन बदल गया, खान-पान बदल गया, कमाने खाने के तरीके बदल गये, आपके घर में कम्प्यूटर और इंटरनेट जैसी चीजें आयी दुनिया भर का बाजार टी.वी. के जरिये आपके घर में घुस आया।[3] इसके साथ ही अब जो गांव छोटे शहर का स्वरूप ग्रहण कर रहे हैं। ऐसे नये बनते शहर शहरों की खूबियों, अच्छाईयों, बुराईयों सबसे युक्त होंगे इनसे बचे रह पाना संभव नहीं है। इसीलिए रामधन को चारो तरफ रंगीनी और रौनक दिखती है। पता नहीं क्या बात है रामधन जब भी यहाँ आता है, बाजार और शहर की रौनक बढ़ा हुआ ही पाया है।

भूमण्डलीकरण के इस दौर में भी रामधन का अनुभव जगत बहुत छोटा है वह अपने गांव और आस-पास में अभी तक का अपना जीवन गुजारा है वह इस शहर के बाजार की रौनक की तुलना महादेव घाट के मेले से ही कर पाता है हर साल माही पुन्नी के दिन भरने वाला मेला। वहाँ भी ऐसी ही भीड़ और रौंकन होती है।

रामधन चौथी तक पढ़ा है और खेती, जमीन, बैल, पेड़, पौधे और तालाब आदि से जुड़ाव रखता है। ऐसा इसलिए है कि रामधन गांव रहा है और यहीं से अपनी जीविका चलाता है। उसकी कोई महत्वाकांक्षा सुख सुविधा प्राप्त करने की नहीं है दूसरी तरफ उसका भाई मुन्ना है जो पढ़ा लिखा और महत्वाकांक्षी है और चीजों को नफे-नुकसान के नजरिये से देखता है भावनात्मक रूप से नहीं और आज के दौर में परंपरागत सोच, विचार, मूल्य, प्रवृत्ति पेशे से जुड़े व्यक्ति का संकट बढ़ गया है ऐसे पेशे विशेषकर खेती जिससे परिवार का जीविकोपार्जन हो जाता था अब संभव नहीं है आज खेती करने वालों के लिए संक्रमण काल चल रहा है।

कृषि से जुड़े परिवार में दो तरह के लोग हैं एक जो परंपरागत पेशे से जुड़े हैं दूसरे वे जो पढ़-लिख लिए हैं और बाजार, विज्ञापन, तकनीक, दूरसंचार माध्यमों आदि से परिचित प्रभावित है ऐसे परिवारों में एक तरफ परिवार में परंपरागत सोच, विचार, मूल्य को मानने वाले लोग हैं तो दूसरी तरफ कुछ नया करने की फिक्र करने वाले ऐसी स्थिति में परिवार के लोगों में मतभेद बढ़ रहा है और संयुक्त परिवार विखर रहे हैं। धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है। एक नयी जीवन शैली अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। उसके साथ आ रहा है एक नया जीवन-दर्शन उपभोक्तावाद का दर्शन। उत्पादन बढ़ाने पर जोर है चारो ओर। यह उत्पादन आपके लिए है, आपके भोग के लिए है, आपके सुख के लिए है।[4] रामधन और उसके भाई मुन्ना के बीच तनाव टकराव पैदा होने की वजह यही है। दोनों खेती बाड़ी को लेकर अलग-अलग सोच रखते हैं जहाँ रामधन सोचता है कि बैल हमारे घर की इज्जत है घर की शोभा है। इससे बढ़कर हमारे पिता की धरोहर

है। उस किसान का भी कोई मान है समाज में जिसके घर एक जोड़ी बैल नहीं है। कैसे समझाता कि हमारे साथ रहते रहते ये भी घर के सदस्य हो गए हैं। वह मुन्ना से कहना चाहता था कि तुमको इनका बेकार बंधा रहना दिखता है मगर इनकी सेवा नहीं दिखती? इनकी दया मया नहीं दिखती?[5]

दूसरी तरफ उसका भाई मुन्ना है जो पढ़ा लिखा है वह चीजों को उपयोगिता की दृष्टि से देखता है वह सिर्फ जरूरत के लिए नहीं कमाना चाहता वह महत्वाकांक्षी है धन्धा करना चाहता है। दरअसल समाज व्यवस्था पर भी कई तरह के नये दबाव है, पीढ़ियों की दूरी को एक नया आयाम मिला है। नयी पीढ़ी द्वारा अपनाये गये मुहावरे ने संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न कर दी है।[6] वह बैलों के संदर्भ में कहता है कि आखिर ये दिनभर बेकार में बंधे ही तो रहते हैं खेती किसानी के दिन छोड़कर और कब काम आते हैं? यहाँ खा-खाकर मुटा रहे हैं ये।[7]

ऐसे में रामधन और मुन्ना में समझौते की गुन्जाइश नहीं रह गयी है नयी अर्थव्यवस्था ने यही किया है उपयोगितावादी दृष्टिकोण का विकास होने से हर चीज को नफे नुकसान से देखा जा रहा है। इससे परिवार में टकराव तनाव बढ़ रहा है और संयुक्त परिवार टूट रहे हैं।

इस अर्थनीति ने व्यापक स्तर पर बेरोजगारी पैदा की जिससे लोगों में अंधविश्वास, कटुता हिंसा की भावना में बढ़ोतरी हो रही है। बहुत छोटे तबके को लाभ पहुंचा है उनकी माली हालत में सुधार हुआ उनकी संपत्ति में बेतहासा वृद्धि हुई है और बड़े तबके में गरीबी अभाव अलगाव विषमता बढ़ रही है इस कहानी में भुलऊ महाराज के पास अभी कुछ वर्ष पहले तक कुछ नहीं था बहुत कम समय में उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाती है कहानी में वर्णन है। आस पास के गांवों में उनकी पंडिताई खूब जमी है। चाहे ब्याह कराना हो, सत्यनारायण की कथा करानी हो, मरनी-हरनी पर गरूण पुरान बांचना हो। सब भुलऊ महाराज ही करते हैं। कुछ साल पहले तक तो कुछ नहीं था इनके पास। अब पुरोहिती जम गई तो सब कुछ हो गया। खेती बाड़ी भी जमा चुके हैं अच्छी खासी।[8]

कहानी को पढ़कर हम समझ सकते हैं कि रामधन पेट भरने के लिए मेहनत मजूरी करते हैं खेती से इतना भी नहीं कमा पाते कि पेट भर सके। वही समाज में अंधविश्वास और कर्मकाण्ड बढ़ने से भुलऊ महाराज की पुरोहिती जम गई तो सब कुछ हो गया खेती बाड़ी तमाम सुख सुविधा आदि आज कि स्थिति में छोटी जोत या मध्यम जोत का किसान पेट भी नहीं भर सकता और बाहरी आमदनी, पुरोहिती या अन्य कोई धन्धा हो तो आप खेती बाड़ी धन सम्पत्ति सुख सुविधा आदि सभी जुटा सकते हैं नयी आर्थिक नीतियाँ लागू होने से समाज में विषमता बढ़ी है जिस कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई है। एक आदमी रोजी रोटी भी नहीं जुटा सकता दूसरे के पास सुख सुविधा के सारे सामान है।

रामधन का भाई मुन्ना बाजारवाद, तकनीक, दूरसंचार माध्यम आदि से प्रभावित है बाजारवाद की व्यवस्था लाभ और ईर्ष्या पर टिकी है यहाँ यही मूल्य है कि अपने मुनाफे के लिए कुछ भी करो। साम दाम दण्ड कुछ भी अपनाओ। आज बाजार में सामान बेचने के लिए कम्पनियाँ क्या नहीं करती? अपने उत्पाद का विज्ञापन द्वारा प्रचार प्रसार कर लोगों तक उसको पहुँचाना अपने ब्रॉड की खूबी बताना वह सामान बिक सके उसके लिए माहौल बनाना आदि। दिक्कत यह आ रही है कि रामधन बाजार के मूल्य से संचालित नहीं है वह कृषि और किसानी से जुड़ा व्यक्ति है। जबकि उदारीकरण की नीतियाँ उसके परंपरागत सोच, विचार, व्यवहार के विपरीत मूल्य को प्रश्रय दे रही हैं। वह पारस्परिक सौहार्द, लगाव, स्नेह और परोपकार आदि में विश्वास करता है और खेत, बैल, घर, परिवार को लेकर लाभ-मुनाफे के आधार पर नहीं बल्कि इज्जत, सम्मान, कृतज्ञता, स्नेह, अपनत्व आदि के परिप्रेक्ष्य में सोचता है इसलिए वह लगातार तीन बार हाट से अपने बैलों के साथ वापस लौटता है उन्हें बिना बेंचे यह जानते हुए भी कि गांव वाले उसके इस उजबकपने पर फिर हंसेंगे। घर में पत्नी अलग चिड़िचिड़ाएगी और मुन्ना गुस्साएगा।'[9] लेकिन रामधन ऐसा कब तक कर सकता है इसकी भी एक सीमा है यही रामधन जैसों की त्रासदी का कारण है कि वह आज के दौर के तौर तरीके को नहीं अपना सकते वह हर चीज को नफे नुकसान की दृष्टि से नहीं देख सकते।

इस व्यवस्था के विपरीत कृषि अर्थव्यवस्था पर निर्भर परिवार के हित परस्पर जुड़े हुए थे टेक्नोलॉजी का उपयोग खेती में नहीं होता था और लोग बुनियादी जरूरत पूरी करने के लिए संघर्ष करते थे लेकिन उदारीकरण के बाद परिस्थिति बदल गयी और ट्रेक्टर से खेती होने लगी रसायनिक खाद, हाइब्रिड बीज का उपयोग होने लगा जिससे पैदावार बढ़ी और लोगों की महत्वाकांक्षा भी। महत्वाकांक्षा लोगों को संवेदनहीन बना देती है क्योंकि व्यक्ति जरूरत के लिए नहीं सुख सुविधा के लिए मान प्रतिष्ठा के लिए महत्वाकांक्षी होता है। बैलों को लेकर मुन्ना और रामधन के बीच संवाद है कि ''मगर किसी की बीमारी को कौन मानता है?'' तभी तो मैं कहता हूँ बेचो और सुभीता पाओ। बातचीत हर बार अपनी सीमा लांघ रही थी। कहने को तो मुन्ना यहाँ तक कह गया था कि इन बैलों पर सिर्फ तुम्हारा ही नहीं, मेरा भी हक है।[10]

मुन्ना अपने बड़े भाई की घर, परिवार, बैल और उसे लेकर जो सोच है संवेदना और भावना है, नहीं सुनना चाहता वह चीजों को उपयोगिता की दृष्टि से देखता है अतीत में किसी से क्या संबंध था उसका क्या उपयोग था इस दृष्टि से नहीं। वह वर्तमान में किसी वस्तु की क्या उपयोगिता है वह फायदे का है या नुकसान का इस दृष्टि से देखता है। इसीलिए उसे बैल अनुपयोगी लगते हैं। ऐसे समय में रामधन जैसे किसानों का जीवन और समस्याओं से ग्रस्त हो जाने वाला है वह टेक्नोलॉजी, बाजार के गणित और बदलाव को नहीं देख रहा है वह परंपरागत तरीके से जीना चाहता है जो संभव नहीं है।

बीड़ी का आखरी कश था और बुझने लगी थी। ऐसा अंत में लिखकर कहानीकार ने यह संकेत दे दिया है कि रामधन जैसे किसानों के जीवन का अंत त्रासद हो गया है और होने वाला है। इस अर्थव्यवस्था

में परंपरागत खेती करने वाले किसान खून पसीना एक कर मेहनत करने के बावजूद भर पेट भोजन की व्यवस्था नहीं कर सकते। इस समस्या का समाधान जन आंदोलन से ही निकल सकता है जिसका संकेत कहनी में नहीं है।

संदर्भ सूची

1. सच्चिदानंद सिन्हा - भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ, वाणी प्रकाशन संस्करण-2013, आवृत्ति-2016, भूमिका से
2. कैलाश बनवासी - बाजार में रामधन, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पहला संस्करण-2004 पृ. 8
3. परिवार में जनतंत्र - संपा. - रमेश उपाध्याय / संज्ञा उपाध्याय शब्द संधान प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण-2004, पृ. 46
4. श्यामाचरण दूबे - समय और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2000, पृ. 172
5. कैलाश बनवासी - बाजार में रामधन, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पहला संस्करण-2004 पृ. 12
6. श्यामाचरण दूबे - समय और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2000, पृ. 130
7. कैलाश बनवासी - बाजार में रामधन, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पहला संस्करण-2004 पृ. 10
8. वही, पृ. 12-13
9. वही, पृ. 18
10. वही, पृ. 11